शास्त्री द्वितीय खण्ड, राष्ट्रभाषा हिन्दी, अ०द्वि०-पत्र
निबंधमाला - गद्य खण्ड
शीर्षक - आखिर पढ़ने से होता क्या है Date: Page:
लेखक - प्रो० केसरी कुमार

लघु उत्तरीय प्रश्नोत्तर -

प्रश्न :- पढ़ने में भेद होता है इस सन्दर्भ में लेखक का क्या मत है?

उत्तर :- प्रो० केसरी कुमार का कहना है कि पढ़ने में भेद होता है। कोई अक्षर पढ़ता है कोई शब्द पढ़ता है और कोई न अक्षर पढ़ता है न शब्द पढ़ता है केवल भाव पढ़ता है। यह भाव ही साहित्य की मूल वस्तु है। भाषा तो छठी अंगुली, तीसरे पाँव की तरह है। यह चश्मा है, पढ़ा और उतार कर रख दिया। इस प्रकार लेखक ने भाव को प्रधान माना है।

प्रश्न :- लिखने वाले से पढ़ने वाले क्यों विलक्षण होते हैं?

उत्तर :- निबंधकार प्रो० केसरी कुमार का कहना है कि लिखने वाले से पढ़ने वाला कहीं ज्यादा विलक्षण होता है। कभी-कभी तो पढ़ने वाले अर्थ दोहन कर लिखने वाले को वह ख्याति दिला देते हैं जैसा कि लिखने वाला लिखते समय सोचता भी नहीं है। मानस की मन्थरा केवल एक कुटिल नारी का प्रतीक बनकर आयी थी, परन्तु गोस्वामी तुलसीदास को क्या पता था कि एक दिन ऐतिहासिक यथार्थ का पर्याय बन जायेगी। सहज रूप में लिखी गई जैनेन्द्र की 'पत्नी' कहानी का अधूरापन ही उनकी कहानी को सर्वश्रेष्ठ कहानी बना देगी। इस बात को जैनेन्द्र भी नहीं जानते थे।

प्रश्न :- निबंधकार पढ़ने की तरह ही लिखने की अनिवार्यता क्यों बताते हैं?

उत्तर :- प्रो० केसरी कुमार का कहना है कि पढ़ाई के साथ-साथ लेखक के लिए लेखन कार्य भी अतिआवश्यक है। उनका कहना है कि रचना एक मजबूरी है। पीड़ा को बाहर निकालने का एक बहाना है जिसके चलते आनन्द के क्षणों का सृजन होता है। लेखक प्रायः आत्माभिव्यक्ति, सामाजिक दायित्व, विद्रोह के कारण लिखते हैं। प्रत्येक रचनाकार एक न खत्म होने वाली खोज से ग्रसित होता है और वह हर रचना में अपने आप को एक नये अनुभव के साथ खोजता चलता है।

शेष आगे —

इस प्रकार नकेनवादी साहित्यकार प्रो० केसरी कुमार ने किसी भी रचना के विषय एवं शिल्प को नये दृष्टिकोण से देखने का प्रयास किया है। यही कारण है कि हिन्दी साहित्य के इतिहास में उनका नाम गर्व से लिया जाता है।

डॉ० देव चरण प्रसाद
एसो० प्रो० हिन्दी
रा० उ० सं० महावि० सुखसेना, पूर्णियाँ
23.04.20

शास्त्री प्रथम खण्ड, राष्ट्रभाषा हिन्दी, अ० द्वि० – पत्र

'निर्मला' उपन्यास

लेखक – मुंशी प्रेमचन्द

Date: _____ Page: _____

प्रश्न :- यथार्थवाद एवं आदर्शवाद के प्रति प्रेमचन्द का दृष्टिकोण कैसा था, स्पष्ट करें।

उत्तर :- उपन्यास सम्राट मुंशी प्रेमचन्द प्रगतिशील उपन्यासकार हैं। उन्होंने शोषित, पीड़ित और दलितों की हिमायत की है। उनका उद्देश्य शोषणहीन समाज का स्थापना करना है। मार्क्स जिस कार्य क्रान्ति द्वारा करना चाहते थे, वहीं प्रेमचन्द समाज को विकसित करके उसमें समझ पैदा करना चाहते थे। प्रगतिवादी साहित्य यथार्थवादी कहा जाता है किन्तु उसका मूल उद्देश्य वर्तमान जीवन की विषमताओं का उन्मूलन कर एक ऐसे आदर्श समाज की स्थापना करना है जहाँ मानव सुखी और सम्पन्न जीवन व्यतीत कर सके। यही प्रेमचन्द का दृष्टिकोण है। प्रेमचन्द मूलतः यथार्थवादी रहे हैं, किन्तु गाँधीवादी युग के प्रभाव से वे आदर्शवाद को नहीं छोड़ पाए हैं। आचार्य नन्ददुलारे वाजपेयी ने उन्हें आदर्शवादी सिद्ध करते हैं और इंसराज रहबर उन्हें यथार्थवादी मानते हैं; प्रेमचन्द स्वयं को आदर्शोन्मुख यथार्थवादी घोषित करते हैं। उन्होंने अपने उपन्यासों में यथार्थवाद और आदर्शवाद को समन्वित रूप रखा है। वहाँ कल्पना की ऊँची उड़ान नहीं है और न ही अस्वाभाविक पात्र और घटनाएँ हैं। उनका आदर्श यह था कि संसार से अन्याय, अत्याचार, पाखण्ड, असमानता आदि समाप्त हों और मानव समाज सुखी बने।

प्रेमचन्द कृत 'निर्मला' उपन्यास का रचनाकाल सन् १९२३ई० तथा प्रकाशन काल सन् १९२७ है। तत्कालीन समाज में दहेज-प्रथा कितनी विनाशक थी, इसका चित्रण तथा दहेज के अभाव में उससे उत्पन्न समस्याओं एवं परिणामों का हृदयविदारक यथार्थ चित्रण 'निर्मला' उपन्यास में किया गया है। वस्तुतः 'निर्मला' अनमेल विवाह तथा दहेज प्रथा की दुःखान्त कहानी है।

इसके अतिरिक्त इस उपन्यास में आदर्शवादी विचार-धाराएँ भी रखी गयी है। अनमेल विवाह से ~~उत्पन्न~~ असंतुष्ट होने पर भी निर्मला अपने अधेड़ उम्र के पति तोताराम से कर्तव्य वश ही प्रेम करने लग जाती है। उसका यह सोचना

शेष आगे –

कि उसे अपने पति को पत्नी सुख से वंचित रखने का कोई अधिकार नहीं है। आदर्शवादी मानसिकता को ही दर्शाता है। सौतेली माता के रूप में निर्मला का चरित्र आदर्शवादी है। निर्मला के सम्पूर्ण चरित्र में उपन्यासकार ने आदर्शवादी विचारधारा का सामंजस्य किया है।

इस प्रकार हम कह सकते हैं मुंशी प्रेमचन्द आदर्शोन्मुख यथार्थवादी उपन्यासकार हैं।

डॉ० देव चरण प्रसाद
एसो० प्रो० हिन्दी
रा०उ०सं० महावि० सुखसेना, पूर्णियाँ
23|08|20

उपशास्त्री, राष्ट्रभाषा हिन्दी, अ० द्वि०-पत्र
दिगंत- भाग- 2 - पद्य खण्ड
शीर्षक — 'कवित्त'

कवि - भूषण

सप्रसंग व्याख्या :-

"पौन बारिबाह पर संभु रतिनाह पर,
ज्यौं सहस्रबाहु पर राम द्विगराज हैं।"

प्रस्तुत पंक्तियाँ हमारी पाठ्य पुस्तक दिगंत- भाग- 2 के भूषण के 'कवित्त' शीर्षक पाठ से ली गई है। इन पंक्तियों में छत्रपति शिवाजी के प्रखर, तेजस्वी व्यक्तित्व का गुण-गान किया गया है। यह प्रसंग शिवाजी की सुकृतियों से संबंधित है।

प्रस्तुत पंक्तियों में महाकवि भूषण कहते हैं जिस प्रकार पवन बादलों को तितर-बितर कर देता है, जिस प्रकार भगवान शिव कामदेव पर अधिकार कर लेते हैं, जिस प्रकार परशुराम सहस्रार्जुन पर विजय पा लेते हैं, ठीक उसी प्रकार शिवाजी भी अपने शत्रु पर विजय पा लेते हैं। कहने का अभिप्राय यह है कि, पवन, भगवान-शिव, परशुराम के व्यक्तित्व के समान ही हमारे राष्ट्र-नायक छत्रपति शिवाजी का व्यक्तित्व है।

उपरोक्त पंक्तियों में महाकवि भूषण ने, पवन, भगवान शिव एवं परशुराम आदि के गुणों से सम्पन्न छत्रपति शिवाजी के चेतना सम्पन्न व्यक्तित्व की प्रशंसा की है। वस्तुतः शिवाजी में देवत्व है, तेजस्विता है, प्रखरता है, शौर्य है और आत्म गौरव भी है।

डॉ० देव चरण प्रसाद
एसो० प्रो० हिन्दी
रा०कृ०सं० महावि० सुखसेना, पूर्णियाँ
23।08।20